व्याप्त है। यह मत केवलनिमित्तेश्वरवाद से भिन्न है।

सर्वेश्वरवाद ईश्वर को व्यक्तित्वरहित मानता है। इसमें इच्छा संकल्प आदि का सर्वथा अभाव रहता है। इसके अनुसार ईश्वर में किसी प्रकार के मानवीय गुणों की अर्थात व्यक्तित्व की कल्पना करना मूर्खता है। ईश्वर विश्व का उपादान कारण है। जिस प्रकार मिट्टी घड़े में व्याप्त रहता है ठीक उसी प्रकार ईश्वर विश्व में व्याप्त रहता है। यहाँ केवलनिमित्तेश्वरवाद से स्पष्ट अन्तर दिख पड़ता है क्योंकि केवल-निमित्तेश्वरवाद ईश्वर को विश्व का निमित्त कारण मानता है, उपादान कारण नहीं।

सर्वेश्वरवाद नियतिवाद का समर्थक है। यह विश्व-प्रक्रिया को प्रयोजनहीन मानता है। ईश्वर के लिए अपने को विश्व के माध्यम से व्यक्त करना अनिवार्य है। ईश्वर के लिए ऐच्छिक नहीं है कि वह अपने को विश्व के माध्यम से व्यक्त करे या न करे। उन्हें तो वैसा करना ही है। यह विश्व ईश्वर की प्रकृति का स्वाभाविक एवं अनिवार्य फल है। यहाँ भी सर्वेश्वरवाद केवल निमित्तेश्वरवाद से भिन्न हो जाता है क्योंकि केवलनिमित्तेश्वरवाद के अनुसार विश्व ईश्वर की स्वतन्त्र इच्छा का परिणाम है। सर्वेश्वरवाद अनेकत्ववाद का विरोधी है। यह एक ही को सत्य और अनेक को मिथ्या बताता है। यह विश्व के एकत्व पर जोर देता है और अनेकत्व को एकत्व में ही समाहित करता है। ईश्वर से स्वतन्त्र पदार्थों का अस्तित्व नहीं हो सकता। विश्व के सभी पदार्थ ईश्वर के विवर्त कहे गए हैं।

इसतरह हम देखते हैं कि यह अनेकेश्वरवाद से भिन्न है क्योंकि अनेकेश्वरवाद अनेक ईश्वर को मानता है जबकि सर्वेश्वर-वाद एक को। पुनः अनेकेश्वरवाद ईश्वर को ससीम और अंशव्यापी मानता है जबकि सर्वेश्वरवाद ईश्वर को असीम तथा सर्वव्यापी मानता है। सर्वेश्वरवाद अनीश्वरवाद का पूर्ण विरोधी है। अनीश्वरवाद ईश्वर के अस्तित्व का खण्डन करता है जबकि सर्वेश्वरवाद ईश्वर के अस्तित्व में